P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

"कला अभिव्यक्ति – एक अध्ययन "

Art Expression - A Study

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 28/12/2020, Date of Publication: 29/12/2020

प्रेमलता कश्यप
सहायक प्राध्यापक,
चित्रकला विभाग,
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स डिग्री कालिज,
मुरादाबाद, उ०प्र० भारत

सारांश

कला मानव की चिरसंगनी है, मानव के विकास के साथ साथ कला का उदभव और विकास माना जाता है। कलाकार अपने हृद्वय में उठ रहे उद्गारों को तूलिका और रंगों के माध्यम से धरातल पर अभिव्यक्त करता है। अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा समाज को राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों से अवगत कराता है। कला मानव जाति के विकास का प्रतीक है। सभी मनुष्यों में स्वाभाविक रूप से रचनात्मक प्रवृति होती है। किसी में कम किसी में अधिक। इसी आधार पर मुनष्य विभिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्यो में रत रहता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी अनुभूति, रूचि तथा भावनाओं के आधार पर विभिन्न प्रकार की रचनाएं करता है। परिणामस्वरूप जब हम अपने कौशल से अपने चित्रों में सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होते देखते हैं तो हमें प्रसन्नता होती है, सुख की अनुभूति होती है और यही सच्ची अभिव्यक्ति है।

Art is the perpetuation of human beings, along with the development of human beings, art is considered to be the origin and development of art. The artist expresses the evocations in his heart through paintbrush and colors on the surface. Through its expression, it makes society aware of political, economic and social conditions. Art symbolizes the development of mankind. All human beings naturally have a creative instinct. Less in some, more in some. On this basis, the sage is engaged in various types of creative work. Each person makes different types of creations based on his or her feeling, interest and feelings. As a result, when we see the expression of beauty in our pictures with our skill, then we feel happy, feel happiness and this is the true expression.

मुख्य शब्द : अभिव्यक्ति, सौन्दर्य, कलाकृति, पराकाष्ठा, सार्वभौमिकता, इन्द्रियॉ।
Manifestation, Beauty, Artistry, Perfection, Universality, Sense.

प्रस्तावना

अभिव्यक्ति की इच्छा मनुष्य में बड़ा शक्तिशाली हो जाती है और उससे अपार सुख का बोध होता है जिनमें यह अधिक शक्तिशाली होती है वही कलाकार बन जाते हैं। अभिव्यक्ति के आधार पर कलाकार ने समाज को प्राचीन और अद्यतन परिस्थितियों से अवगत कराया, अनेक अमूल्य निधियॉ प्रदान की और प्रगति का पथ निर्देशित किया है। जिसके आधार पर मानव समाज निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है। मनुष्य ने अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा अनेक ज्ञान, विज्ञान तथा कला के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किए, जो आज हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के प्रतीक हैं। अभिव्यक्ति मनुष्य की जन्मजात स्वाभाविक प्रवृति है। शायद यही कारण है कि बालक जन्म लेते ही रोता है। स्वर के माध्यम से बालक अपनी अभिव्यक्ति करता है। स्वर के बाद शब्द और क्रमशः उसकी अभिव्यक्ति के माध्यमों की संख्या बढ़ती जाती है। आज अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम है। अनेक कारण हैं, चित्रकला भी उनमें से एक है। जिसके माध्यम से कलाकार सम–सामयिक परिस्थितियों को तूलिका और रंगों के माध्यम से अभिव्यक्त कर समाज का जागरूक करता है।

साहित्यावलोकन

चित्रकला विषय में नित .नवीन प्रयोग देखने को मिल रहे हैं समसामयिक कलाकार नवीन शैली एवं आधुनिक तकनीक के माध्यम से कलाकृ ति को पूर्ण करके समाज के सम्मुख प्रदर्शित कर रहा है कला की अभिव्यक्ति का माध्यम कला की विधियां एवं प्रविधियांए कला में सौंदर्यए कला और समाज कला और धर्मए कला में धार्मिक संलयन इत्यादि विषयों पर साहित्य उपलब्ध भी हो रहा है कला कलाकार की प्रगति का माध्यम है आधुनिक कलाकार

सामाजिक राजनीतिक आर्थिक परिस्थितियों को अपने धरातल पर उकेरते हैं और नवीन लेखकों और समीक्षकों के द्वारा दिए गए संकेतों को ध्यान में रखतेहुए अपनी कलाकृति का निर्माण करते हैं आज का कलाकार विभिन्न प्रकार के धरातल पर विभिन्न आधुनिक शैली में कहीं ऐक्रेलिकए कहीं तैलीय कहीं पेस्टल अथवा जल रंग के माध्यम से अपने मन में छुपे भावों को अभिव्यक्त कर रहा है टेक्निक और प्रविधियां से संबंधित कला साहित्य वी हमारे विद्यार्थियों को उपलब्ध है जिससे प्रेरित होकर अपनी कलाकृतियों को पूर्ण कर रहा है कला का दर्शनए . रामचंद्र शुक्लए मेरठ प्रकाशन 1964 श्चित्रकला का रसास्वादन रामचंद्र शुक्लए हिंदी प्रचारक पुस्तकालय प्रकाशन वाराणसी अक्टूबर 1962 एश्भारतीय परंपरा में सौंदर्यश् डॉ अर्चना रानीए प्राइम पब्लिशिंग हाउस मेरठ 30 जनवरी 2020ए श्सामाजिक संदर्भ में नारी अभिव्यक्तिश् डॉक्टर रवीश कुमारए प्रत्यूष पब्लिकेशन दिल्ली ए2018श् कला विवेचनश् डॉ विमल कुमारए भारत भवन प्रकाशन प्रथम संस्था 1968 उपर्युक्त प्रकाशन के अतिरिक्त अनेक विभिन्न पुस्तकें उपलब्ध हैं जिससे विद्यार्थी लाभ उठाकर शोध कार्य एवं अपने प्रयोगात्मक कार्य को पूर्ण कर सकते हैं ।

उदेद्श्य एवं प्रारूप

जीवन ऊर्जा का महासागर है। जब अंतश्चेतना जागृत होती है तो ऊर्जा जीवन को कला के रूप में उभारती है। कला जीवन को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से समान्वित करती है। इसके द्वारा ही बुद्वि, आत्मा का सभा स्वरूप झलकता है। कला अभिव्यक्ति उस क्षितिज की भॉति है जिसका कोई छोर नहीं इतनी विशाल इतनी विस्तृत, अनेक विधाओं को अपने में समेटे है। हद्वय की गहराइयों से निकली अनुभूति जब मानव का रूप लेती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि कला का अर्न्तमन मानो साकार हो उठा हो चाहे लेखनी उसका माध्यम हो या रंग एवं तूलिका अथवा सुरों की पुकार या वाद्यों की झंकार। कला ही आत्म शान्ति का माध्यम है। यह कठिन तपस्या है, साधना है। इसी के माध्यम से कलाकार सुनहरी और इन्द्रधनुष आत्मा से स्वप्निल विचारों को साकार रूप देता है। यही इस शोध पत्र का लेखन का उददेश्य एवं प्रारूप है।

अभिव्यक्ति से अभिप्राय

आग पानी में लगती है। जिसे बड़वानल कहते हैं और मन में भी जिसे क्रोधाग्नि कहते हैं तो फिर मनुष्य तो आग पानी और पता नहीं ऐसे ही कितने विविध पदार्थो से बना है। फिर मनुष्यों में भी कलाकार या कवि इनके हद्वय में आग पानी का उठना क्या मुश्किल कभी मन अतीत वेदना में डूब जाता है तो कभी प्रफुल्लता से भर उठता है। कभी मन में आग जल उठती है तो कभी बर्फ की तरह शीतलता व्याप्त हो जाती है। मनुष्य का शरीर एक माध्यम है इनका। कलाकार की तूलिका और कवि की वाणी धातु की भॉति ही या उससे भी अधिक 'गुड कन्डक्टर' है। प्रभावों को तुरन्त अभिव्यक्त करने में जैसे पीतल या तांबे के तार बिजली के लिए बटन दबाते ही इन पीतल या तॉबे के तारों में बिजली दौड़ पड़ती है और क्षण भर में मीलों पहुॅच जाती है। वैसे ही कलाकार के चित्रों के द्वारा उसके मन की वेदना ज्वाला या शीतलता।

कलाकार का मन शीशे की तरह होता है। जिसका अक्स उसकी कला में उतर पड़ता है। इतना ही नहीं उसकी आग उसकी कला सोख लेती है और उसकी कृतियों के रूप में बाहर आ जाती है और तब कलाकार का मन उसके प्रकोप से मुक्त हो जाता है। निर्विचार हो जाता है इसी प्रकार उसके मन की वेदना, ज्वाला, शीतलता तथा सूक्ष्म उद्वेग या मनोभाव उसकी कला के रूप में बाहर निकला करते हैं और कलाकार इन्हीं के बार–2 पिंड छुड़ाने का अभ्यास किया करता है। जब तक यह उसे छोड़ नहीं देते वह बार बार चित्र बनाता है।

जीवन ऊर्जा का महासागर है। जब अंतश्चेतना जागृत होती है तो ऊर्जा जीवन को कला के रूप में उभारती है। कला इसमें कोई सन्देह नहीं की। कला जीवन को सत्यम शिवम सुन्दरम से समन्वित करती है इसके द्वारा ही तृप्ति आत्मा को सत्य स्वरूप झलकता है। कला उस क्षितिज की भांति है। जिसको कोई छोर नहीं इतनी विशाल इतनी विस्तृत। उनके विद्याओं को अपने में समेटे है। हद्वय की गहराइयों से निकली अनुभूति जब कला का रूप लेती हैं कला का अन्तर्मन मानो साकार हो उठा हो चाहे लेखनी उसका माध्यम हो या रंग एवं तूलिका अथवा सुरों की पुकार या वाद्यों की झंकार। कला ही आत्मशान्ति का माध्यम है। यह कठिन तपस्या है, साधना है इसी के माध्यम से कलाकार सुनहरी और इन्द्रधनुष आत्मा से स्वप्निल विचारों को साकार रूप देता है।

कलाकार की कला में ऐसी शक्ति होनी चाहिए कि वह लोगों को संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठाकर उसे ऐसे ऊॅचे स्थान पर पहुॅचा दे जहॉ केवल मनुष्य मनुष्य रह जाता है। कला व्यक्ति के मन में बनी स्वार्थ, परिवार क्षेत्र, धर्म, भाषा और जाति आदि की सीमाएं मिटाकर विस्तृत रूप और व्यापकता प्रदान करती है। व्यक्ति के मन को उदार बनाती है। कला व्यक्ति को स्व से निकलकर ''वसुदैव कुटुम्बकम'' से जोड़ती है।

रविन्द्रनाथ ठाकुर के मुख से निकला – कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है।''

टालस्टाय के शब्दों में – अपने भावों की क्रिया रेखा, रंग, ध्वनि या शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्ति करना कि उसे देखने या सुनने में भी वही भाव उत्पन्न हो जाए कला है।

भारतीय परमपरा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं। जिनमें कौशल अपेक्षित हो, कला क ऐसी अभिव्यक्ति है। जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रमाण होता है।

मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में – अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही तो कला है। (साकेत, पचमसर्ग दूसरे शब्दों में मन के अन्तःकरण की सुन्दर प्रस्तुति ही कला है।

कला में आत्मा की अभिव्यक्ति के लिए आत्मा का तादात्मय स्थापित करना आवश्यक माना जाता है। आत्मा का तादात्मय स्थापित करना तभी हो सकता है जब कलाकार अपनी सारी शारीरिक, मानसिक तथा हार्दिक शक्तियों को चित्र में चित्रित किये जाने वाली वस्तुओं को आत्मा में केन्द्रित कर देता है। अर्थात किसी वस्तु का चित्रण करने में कलाकार को सूक्ष्म रूप से उस

वस्तु में प्रवेश करना होता है और ऐसी अवस्था में उसमें तथा उस वस्तु में कोई भेद नहीं रह जाता। वह खुद वही चीज बन जाता है और इस हालात में उसे जो अनुभूति प्राप्त होती है उसी को वह अपनी कला में अभिव्यक्त करता है। यह अभिव्यक्ति तब उस वस्तु का केवल ब्राह्य रूप न रहकर ब्राह्य और आन्तरिक का सुमेल होता है और ऐसा रूप साधारण दृष्टि से देखने वालों को वस्तु के ब्राह्य रूप से भिन्न भी लग सकता है। क्योंकि चित्र में उस वस्तु की आत्मा संयोग उपस्थित होता है। इस प्रकार उपर्युक्त अध्ययन से ज्ञात होता है कि कला अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है।

अभिव्यक्ति में इन्द्रियों का योगदान

अभिव्यक्ति के द्वारा मनुष्य का विकास क्यों और कैसे हुआ यह विचारणीय है। प्रत्येक प्राणी में इच्छा एक स्वाभाविक वृत्ति है। इच्छा क्या चाहती है, उसका लक्ष्य क्या है यह भी एक विकट प्रश्न है और विद्वानों ने नाना प्रकार के आदर्श की कल्पना की है पर स्वाभाविक दृष्टि तो यह कहती है कि मनुष्य सुख की इच्छा रखता है और इसी को ध्यान में रखकर प्रत्येक कार्य करता है सुख किसमें प्राप्त होता है। यह भी निर्धारित करना उतना सरल नहीं, पर सुख का अनुभव कैसे करता है। इस पर विचार किया जा सकता है। सुख का अनुभव हम किसी माध्यम से करते हैं, यह भी जाना जा सकता हैं साधारण तौर पर यह सभी जानते हैं कि सुख का माध्यम इन्द्रियॉ हैं, जो दृष्टि, सुनना, छूना, चखना, सूँघना इत्यादि इन्हीं के द्वारा हम सुख का अनुभव करते हैं। सुख प्राप्त करने के दो तरीके हैं, एक तो यह कि इन्द्रियों के द्वारा हम अन्य वस्तुओं से परिचय प्राप्त करें, और दूसरे यह कि इन्हीं इन्द्रियों के द्वारा हम ओरों का अपने से परिचय करायें। अर्थात इन्द्रियॉ दो कार्य करती हैं, जानना और बताना और यह दोनों ही बातें सुख की प्राप्ति करती हैं। हम आखों से देखकर भी सुख प्राप्त करते हैं और हमारी आखों के द्वारा जो व्यक्त होता है उससे भी हमें सुख प्राप्त होता है अर्थात उससे अभिव्यक्ति भी होती है। हम कान से सुनकर भी सुख पाते हैं, और मुँह से बोलकर भी शरीर अपने प्रत्येक अंग से सुख पाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन्द्रियों के दो कार्य हैं एक तो परिचय प्राप्त करना और दूसरा अभिव्यक्ति करना। दोनों से ही सुख प्राप्त होता है। यही अन्तर है मनुष्य और जानवर में मनुष्य जितना सुखी है उतना जानवर नहीं।

जहॉ कवि रंग रूप तथा आकार के लयात्मक स्वरूपों को पहिचानने लग जाता है या उन्हें ही अधिक महत्व देता है। यही वह चित्रकार की भॉति अभिव्यक्ति करने लग जाता है। ऐसे स्थलों पर कवि प्रकृति में उपस्थित दृश्य–स्थलों या वस्तुओं का केवल हुबहू चित्र नहीं उतारने लग जाता बल्कि प्रकृति के विभिन्न वस्तुओं, आकारों रूप और रंगों के महत्व को प्रत्यक्ष देखने लग जाता है ऐसे स्थलों पर उसका मस्तिष्क केवल आखों द्वारा चित्रमय अनुभूति प्राप्त करता है। दृश्य में उपस्थित वस्तुऐं क्या हैं, उनका कार्य क्या है, उनका उपयोग क्या है या वे हमारे मन में क्या भाव या अर्थ भरते हैं। इसे न सोचकर वह केवल उनके आपसी सुमेल को देखता है जैसे हरे भरे मैदान में लाल रंग की चुनरी पहने स्त्री का जाना, काले घने बादलो के आगे धवल खेत बगुलों की पंक्ति का एक ओर से दूसरे ओर निकल जाना, धवल जल में, अनवरत रूप से लहरों का तरंगित होना, पहाड़ियों का कतार बॉधे खड़ा होना, ऊँची–ऊँची पर्वतीय चोटियों का ऊपर आकाश को छूना, बादलों का पहाड़ियों से टकराना, ऊचॉई से गिरते झरने का नीचे आकर बिखरना इत्यादि ऐसे ही अनेक स्थल कालिदास तथा अन्य प्रकृति निरीक्षक कवियों की रचनाओं को दृष्टिगोचर होते हैं और सहज ही उनकी कलात्मक चित्रानुभूति का परिचय मिलने लग जाता है। इस प्रकार कवि की प्रतिभा कलाकार के रूप में अभिव्यक्त होने लग जाती है, किन्तु शब्द ही शब्द है और रूप रंग तथा आकार और ही हैं कवि की अभिव्यक्ति का आधार शब्द हैं। संगीतज्ञ की अभिव्यक्ति का आधार स्वर और ऐसे ही चित्रकार सीधे रूप रंग तथा आकार की अभिव्यक्ति करता है। जिसमें लयात्मकता का केवल बोध ही नहीं होता, वरन वह प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगती है अर्थात चित्रकार की अनुभूति भी नेत्र से होती है और नेत्र उन्हें पुनः चित्रकार के चित्र के रूप में उपस्थित कराने में सहायक होते हैं।

कला और आत्म अभिव्यक्ति

कलाकार के अन्तःकरण में परमात्मा या ब्राह्य का एक अंश ''आत्मा'' स्वयं विद्यमान है। आत्मवादी कला वह कला है जिसमें आत्मा को कला का मूल प्रेरणा स्तोत्र माना जाता है। ब्राह्य संसार या प्रकृति को महत्व न देकर उसके 'कारण' आत्मा या परमात्मा को मूल 'कर्त्ता' माना जाता है। परमात्मा वह है जिसकी प्रेरणा से ब्रहाण्ड सृष्टि प्रकृति या संसार की रचना हुयी है। प्राणी भी उसी महान एकमात्र कलाकार की कला का एक नमूना मात्र है। संसार का कण कण उसी परमात्मा की प्रेरणा से उदभासित होता है उसी के द्वारा निर्मित और चालित है। सृष्टि का कण कण प्रत्येक वस्तु के केन्द्र में परमात्मा की सत्ता वर्तमान है। कलाकार भी उसी परमात्मा की एक कृति है, और उसके मूल या केन्द्र में भी यही परमात्मा की सत्ता आत्मा के रूप में वर्तमान है। संसार में ब्राह्य रूप में हमें जो कुछ दिखायी पड़ता है उसी परमात्मा का प्रतिबिम्ब मात्र है और उसके केन्द्र या मूल में परमात्मा स्वयं स्थित है। वह न हो तो वस्तु भी न होगी, वस्तु तो केवल प्रतिबिम्ब मात्र है। उस चेतन ब्राह्य या परमात्मा का। इसलिए प्रतिबिम्ब सत्य नहीं, सत्य तो उसका मूल या केन्द्र परमात्मा है जो आत्मा के रूप में सब वस्तुओं में वर्तमान रहता है। इसलिए कलाकार को वस्तु के ब्राह्य रूप को सत्य नहीं समझना चाहिए न उसे महत्व देना चाहिए। उसे तो वस्तुओं के मूल में स्थित ब्राह्य या परमात्मा के रूप में आत्मा को पहिचानना चाहिए और उसी को अपनी कला के द्वारा अभिव्यक्त करना चाहिए।

आत्मवादी कला

आत्मवादी कला वह कला है जिसमें आत्मा को कला का मूल प्रेरणा स्त्रोत माना जाता है। ब्राह्य संसार या प्रकृति को महत्व न देकर उसके कारण आत्मा या परमात्मा को मूल कर्ता माना जाता है। परमात्मा वह है जिसकी प्रेरणा से ब्राहाण्ड, सृष्टि, प्रकृति या संसार की रचना हुयी है। प्राणी भी उसी महान एकमात्र कलाकार

की कला का एक नमूना मात्र है। संसार का कण–2 उसी परमात्मा की प्रेरणा से उदकासित होता है। उसी के द्वारा निर्मित और चालित है। सृष्टि का कण–2 प्रत्येक वस्तु के केन्द्र में परमात्मा की सत्ता वर्तमान है। कलाकार भी उसी परमात्मा की एक कृति है और उसके मूल या केन्द्र में भी यही परमात्मा की सत्ता आत्मा के रूप में वर्तमान है। संसार के ब्राह्य रूप में हमें जो कुछ दिखाई पड़ता है। उसी परमात्मा का प्रतिबिम्ब मात्र है, और उसके केन्द्र या मूल में परमात्मा स्वयं स्थित है। वह न हो तो वस्तु भी न होगी। वस्तु तो केवल प्रतिबिम्ब मात्र है, उस चेतन ब्राह्य या परमात्मा का। इसलिए प्रतिबिम्ब सत्य नहीं सत्य तो उसका मूल या केन्द्र परमात्मा है जो आत्मा के रूप में सब वस्तुओं में वर्तमान रहता है। इसलिए कलाकार को वस्तु के ब्राह्य रूप को सत्य नहीं समझना चाहिए न उसे महत्व देना चाहिए। उसे तो वस्तुओं के मूल में स्थित ब्राह्य या परमात्मा के रूप आत्मा को पहिचानना चाहिए उसी को अपनी कला के द्वारा अभिव्यक्त करना चाहिए। ब्राह्य रूप में नहीं फसंना चाहिए।

समाज में कला की प्रतिष्ठा विभिन्न स्तरों पर होती है। जिस स्तर का समाज होता है अधिकतर वहॉ की कला का स्तर भी वैसा ही होता है। धार्मिक समाज में कला धार्मिक समाज की प्रतिष्ठा होती है। व्यवसायी समाज में व्यवसायी कला की प्रमुखता रहती है। बुद्विमान समाज में कला का बौद्विक स्वरूप पसन्द किया जाता है। साधारण स्तर के समाज में जहॉ लोग अधिकतर अपने रोजी धन्धे में ही व्यस्त रहते हैं। कला का यर्थाथवादी रूप पसन्द किया जाता है। जिससे लोगों को शारीरिक सुख या ऐन्द्रिक सुख प्राप्त हो। कलाकारों का समाज मौलिक विशेषता वाली कला पसन्द करता है। धनी समाज विलासपूर्ण कला से तृप्त होता है। इस प्रकार विभिन्न स्तर के समाज में विभिन्न स्तर की कला–प्रतिष्ठा होती है। जिस प्रकार अलग–2 समाज की अभिरूचि अलग–2 होती है। वैसे ही कला को भी भिन्न–2 रूप में पाया जाता है। यही कारण है कि कला का अर्थ कला का ध्येय या कला का रूप, समय, स्थान परिस्थिति तथा जीवन के अनुरूप बदलता रहा है। संसार में अब तक कला के जितने रूप आये हैं, वे सभी अपने–2 समाज, जीवन, विचारधारा, सभ्यता और संस्कृति को ही अभिव्यक्त करते हैं।

उपसंहार

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर स्पष्ट हो जाता है कि अभिव्यक्ति स्वयं को व्यक्त करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है एवं पॉच इन्द्रियों का अभिव्यक्ति में विशेष योगदान है। कलाकार अपनी तूलिका और रंगों के माध्यम से समाज की प्रत्येक परिस्थिति को धरातल पर उकेर कर समाज को जागरूक करता है, और इसी आधार पर मनुष्य विभिन्न प्रकार की अनुभूति, रूचि एवं भावनाओं के आधार पर समय समय पर कलाकृतियों का निर्माण करता रहता है। परिणामस्वरूप जब हम अपने कौशल से चित्रों की अभिव्यक्ति करके दृष्टा को सुख की अनुभूति कराते हैं, तो यही एक सच्ची कलाकार की सफल अभिव्यक्ति होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शुक्ल रामचन्द – कला का दर्शन, कोरोना आर्ट प्रकाशन मेरठ प्रथम संस्करण 31 दिसम्बर – 1904*
2. *विमल डा0 कुमार – कला विवेचन, भारत भवन प्रकाश पटना प्रथम संस्करण –1968*
3. *शुक्ल रामचन्द – चित्रकला का रसास्वादन हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय प्रेम, वाराणसी*
4. *शुक्ल रामचन्द – कला और आधुनिक प्रवृत्तियॉ हिन्दी भवन, लखनऊऊ1974*
5. *रानी डा0 अर्चना – भारतीय परम्परा में सौन्दर्य पब्लिकेशन, मेरठ – प्रथम संस्करण 30 जनवरी 2020*
6. *शुक्ल रामचन्द – कला प्रसंग, कारोना आर्ट, पब्लिकेशन hi.m.wikipedia.arg.-wiki, कला*